नारायण

गरीब के दामन दर्द,चुभता निशान छोड जाता है ।
दर्द के बोझ जवां बूढा होकर रह जाता है ।।
दर्द में झोकने वाला मुस्कराता है किनारे होकर ।
बदनसीब थक जाता हैं दर्द का बोझ ढोकर ।।
शोपण वंचित का,जुल्म आदमियत पर ।
दर्द का जख्म रिस रहा उूंचनीच के नााम पर ।।
मातमी हो जाता है,गरीब का जीवन सफर ।
सांस भरता गरीब अभावों के बोझ पर ।।
जंग अभावो से,हाफ हाफ करता बसर ।
चबाता रोटी,आंसूओ में भीगोकर ।।
उत्पीडित नही कर पाता पार,
दर्द का दरिया जीवन भर ।
दिया है दर्द जमाने ने दीन जानकर ।।
गरीब का दामन रह गया जख्म का ढेर हाकर ।
दर्द भरा जीवन कटते लम्हे कांटों की सेज पर ।।
अब तो हाथ बढाओ भारती,डूबते की ओर ।
वंचित हैं,उठ जाओगे,नर से नारायण होकर ।।

नन्दलाल भारती